दिनांक 28 मार्च, 2023 को बाफना केन्द्र, आमीनगांव (गुवाहाटी) के स्थापना दिवस पर माननीय राज्यपाल श्री गुलाब चंद कटारिया जी अभिभाषण

मेरे दिव्यांग भाई-बहनों,
तथा सभा में उपस्थित समाज के गणमान्य महानुभावों !

सबसे पहले, इस "बाफना केंद्र" के 32वें स्थापना दिवस पर, आप सभी को हार्दिक बधाई और ढेर सारी शुभकामनाएँ।

मरुभूमि के प्रदेश राजस्थान से नदियों व हरियाली के प्रदेश असम में आकर मुझे एक अलग ही दुनिया का रंग देखने को मिला है। हालांकि असम और राजस्थान देश के दो छोरों पर बसे हैं तथा दोनों प्रदेशों के बीच लंबी दूरी है, फिर भी दोनों प्रांतों का सदियों से संपर्क रहा है।

जैसाकि मुझे जानकारी मिली है कि सोलहवीं सदी में मणिपुर के राजा के आग्रह पर विद्रोहियों के दमन के लिए राजपुताना के राजा मानसिंह अपनी सेना लेकर आये थे। उनमें से बहुत से सैनिक मणिपुर, असम और बंगाल में स्थायी रूप से बस गये थे। असम के ग्वालपाड़ा जिले के श्री सूर्यपहाड़ पर 12वीं शताब्दी में पहाड़ की शिला पर खोदित जैन तीर्थंकर भगवान आदिनाथ तथा भरत-बाहुबली की मूर्तियां प्राप्त हुई हैं, जो प्रमाणित करती हैं कि पूर्वांचल में जैन धर्म का बारहवीं सदी में भी प्रचलन था।

असम के प्रात:स्मरणीय लेखक, गीतकार, नाट्यकार, प्रथम असमीया फिल्म के निर्माता, स्वाधीनता आंदोलन के सेनानी असमिया संस्कृति के प्रवाद पुरुष रूपकुंवर ज्योतिप्रसाद अग्रवाला के पूर्वज नवरंगलाल अग्रवाला 1811 में असम के ग्वालपाड़ा में आकर बसे थे। उनके ही वंशज ज्योतिप्रसाद अग्रवाल ने न सिर्फ असमिया युवती से शादी की अपितु पूरी तरह असम के जनजीवन में रच-बस गये थे। उन्होंने असमिया कला, साहित्य, संस्कृति में जितना अवदान दिया है, उसका कोई सानी नहीं है। यही वजह है कि आज भी असमवासी हर वर्ष ज्योति प्रसाद अग्रवाल की जन्मतिथि तथा पुण्यतिथि पर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन कर उन्हें स्मरण करते हैं।

एक जमाना था, जब असम यातायात की दृष्टि से काफी समस्यापूर्ण था तथा राजस्थान से असम आने के लिए लगभग 3 महीनों की कठिन यात्रा करनी पड़ती थी। यातायात की विकटता के बावजूद राजस्थान से उस जमाने में व्यवसाय के लिए काफी संख्या में मारवाड़ी व्यापारी असम आकर बस गये थे। न सिर्फ बस गये थे, बल्कि अपनी लगन, मेहनत व दूरदर्शिता से असम के व्यवसाय-वाणिज्य का केंद्र बन गये। आज भी असम का व्यवसाय-वाणिज्य मारवाड़ी समाज के लोगों द्वारा ही नियंत्रित है।
असम में हालांकि मारवाड़ी समाज के लोग व्यवसाय-वाणिज्य करने के लिए आकर बसे थे, लेकिन उन्होंने खुद को सिर्फ पैसे कमाने तक ही सीमित न रखकर स्थानीय लोगों के कल्याण के लिए भी काफी कुछ किया है। आज हम जिस केंद्र में एकत्रित हुए हैं, उसकी स्थापना व संचालन करने वाले श्री शुभकरण बाफना जी ने मानव सेवा के क्षेत्र में जितना कार्य किया है, उसकी जितनी तारीफ की जाये कम है।

भाइयों और बहनों,
2011 की सामाजिक-आर्थिक जनगणना के अनुसार, भारत में दिव्यांगजनों की कुल संख्या दुनिया भर में दिव्यांगजनों की कुल 15% आबादी का 2.21% है। इसलिए, केंद्र और राज्य सरकार ने दिव्यांगजनों के कल्याण के लिए अनेक योजनाएं शुरू की हैं।

हमारे असम के दिव्यांग भाई-बहनों के कल्याण के लिए मेरी राज्य सरकार ने दीन दयाल दिव्यांगजन साहाज्य योजना" शुरू की है, जो

एक महत्वाकांक्षी योजना है। हमने दिव्यांगजनों के लिए एक बेहतर जीवन सुनिश्चित करने का लक्ष्य रखा है, ताकि वे गर्व और सम्मान के साथ रह सकें। शुरुआती चरण में इस योजना से करीब 1 लाख दिव्यांग लोगों को फायदा मिल चुका है। इसके अलावा "Assistance to Disabled Persons for Purchase/fitting of Aids and Appliances (ADIP) Scheme," "District Disability Rehabilitation Centre (DDRC)," "Un-employment allowances to Persons with Disability," "Rehabilitation Grant," "Allowances to the family with disabled children," "Allowance to employees with disabilities and child care allowance to women employees with disabilities" आदि जैसी अनेक स्कीम चलाई जा रही हैं।

आज इस शुभ अवसर पर समाज के लोगों से मेरी अपील है कि आपलोग इन योजनाओं का लाभ हमारे दिव्यांग भाई-बहनों को आसानी से दिलवाने में जरूर मदद करें। यह एक तरह से हमारी ज़िम्मेदारी भी बनती है।

मुझे अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है कि पूर्वोत्तर को विकलांगता के अभिशाप से मुक्त करने के लिए श्री शुभकरण बाफना जी ने अपने पिताजी की पुण्य स्मृति में तोलाराम बाफना कृ्त्रिम पैर व केलिपर केंद्र की स्थापना कर अब तक 11 हजार दिव्यांगों को विश्व प्रसिद्ध अत्याधुनिक जयपुरी कृ्त्रिम पैर व केलिपर नि:शुल्क प्रत्यारोपित कर मानव सेवा के क्षेत्र में अतुलनीय कार्य किया है। जब किसी का पैर कट जाता है, तब उसके लिए जीवन निर्वाह करना कितना दूभर होता है, यह तो भुक्तभोगी ही जानता है। ऐसे व्यक्ति को जब कृ्त्रिम पैर लगाकर अपने पैरों पर चलने लायक बना दिया जाता है, तो वह उसके लिए जिंदगी का सबसे अनुपम उपहार होता है। शुभकरण बाफना ने 11 हजार दिव्यांगों को नया जीवन प्रदान कर मानवता की जो सेवा की है, वैसी ही मानसिकता अगर हमारे समाज के सभी लोग रखने लगें तो हमारी धरती स्वर्ग बन सकती है। कामरूप जिला सिविल अस्पताल तथा नारायणा अस्पताल की स्थापना हेतु भी उन्होंने करोड़ों की संपत्ति दान कर महान सेवा का कार्य किया है। मैं श्री बाफना को उनकी इस महत् सेवा के लिए साधुवाद देता हूँ। साथ ही मैं असम के चप्पे-चप्पे पर बसे मारवाड़ी समाज के लोगों से भी आग्रह करना चाहता हूँ कि वे भी श्री बाफना का आदर्श ग्रहण करें तथा असम को सिर्फ कर्म भूमि ही नहीं सेवा भूमि भी समझें और अपनी कमाई का कुछ हिस्सा समाज के कल्याण के लिए भी खर्च करें। भूखे को खाना खिलाने, प्यासे का पानी पिलाने, रोगी का इलाज करने से बढ़कर दुनिया में और कोई धर्म नहीं है।

हम समाज में रहते हैं, समाज से कमाते हैं तो हमारा फर्ज बनता है कि हम समाज के लिए भी कुछ करें। समाजसेवा कर हम समाज पर कोई अहसान नहीं करते हैं, बल्कि समाज का अंग होने नाते हम अपना कर्त्तव्य ही करते हैं। हमें समाज की सेवा अपना कर्तव्य समझकर करनी चाहिए। अगर देश के लोग समाजसेवा को अपना कर्तव्य, अपनी जिम्मेदारी समझकर करें तो हमारा देश "विश्वगुरु" बन सकता है।

मैं श्री बाफना को पुन: साधुवाद व धन्यवाद देते हुए आप सभी से निवेदन करता हूँ कि आप लोग भी श्री बाफना के आदर्श को अपनायें तथा जिससे भी, जो भी सेवा हो सके, करने की पहल करें, तभी हमारा समाज एक आदर्श समाज बन पायेगा और समाज के लोगों की दु:ख-तकलीफें दूर हो सकेगी। मैं श्री बाफना जी को मुझे इस केंद्र में निमंत्रित करने तथा दिव्यांग भाई-बहनों से उनका दु:ख-दर्द बांटने का मौका देने के लिए धन्यवाद ज्ञापन करते हुए अपना वक्तव्य यहीं समाप्त करता हूँ।

जय हिंद !